International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 11, Issue 05, May 2024
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com
© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

नागर भौली में निर्मित प्रारम्भिक गुप्तकालीन मंदिर : एक अध्ययन

ज्योति

शोधार्थी, इतिहास विभाग,

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,

अस्थल बोहर, रोहतक–124021

सारांश

यह अध्ययन प्रारंभिक गुप्त नागर शैली में निर्मित मंदिरों के स्थापत्य और धार्मिक पहलुओं की जांच करता है, जो प्राचीन भारत में चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी तक गुप्त काल के दौरान उनके महत्व और विकास पर प्रकाश डालता है। यह शोध वास्तुशिल्प, रचनात्मकता और धार्मिक आस्था के बीच परस्पर क्रिया पर ध्यान केंद्रित करते हुए उस समय के मंदिरों की अनूठी विशेषताओं का अध्ययन करता है। पुरातात्विक खोजों, लेखों और विशेषज्ञों की राय की सावधानीपूर्वक जांच करके, अध्ययन प्रारंभिक गुप्त मंदिर वास्तुकला की जटिलताओं को उजागर करने और उनके वास्तुरूप के भीतर छिपे अर्थों को समझाने का प्रयास करता है। यह शोध पता लगाता है कि कैसे सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों ने उस समय के वास्तुशिल्प निर्णयों को प्रभावित किया, जो गुप्त मंदिर निर्माण में विभिन्न कलात्मक शैलियों के मिश्रण पर प्रकाश डालता ह। यह शोध मंदिरों से जुड़ी धार्मिक प्रथाओं पर प्रकाश डालता है, अनुष्ठानों, प्रतीकों और भक्ति की अभिव्यक्तियों की जांच करता है। इन मंदिरों के विकास की जांच करके, यह शोध गुप्त काल के दौरान सांस्कृतिक और धार्मिक वातावरण के बारे में हमारे ज्ञान को बढ़ाता है। इसके अलावा यह शोध भारतीय इतिहास के इस महत्वपूर्ण युग के दौरान कला और आस्था के बीच संबंधों पर बहुमूल्य अंतदृष्टि प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : गुप्त कालीन मन्दिर, नागर शैली, वैष्णव मन्दिर, स्थापत्य कला, संस्कृति।

भूमिका

प्रारंभिक गुप्त काल के मंदिर भारतीय कला और वास्तुकला में महान ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व रखते हैं। गुप्त साम्राज्य के सत्ता में आने से पहले निर्मित, ये मंदिर प्राचीन भारत की धार्मिक प्रथाओं और स्थापत्य शैली में मूल्यवान अंतदृष्टि प्रदान करते हैं। भारतीय इतिहास में प्रारंभिक गुप्त काल, लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईस्वी तक रहा, यह काल महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और कलात्मक विकास का काल था। इस अवधि के दौरान बनाए गए मंदिर हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक, भगवान विष्णु और मुख्यतः शिव भगवान की पूजा के लिए समर्पित हैं। प्रारभिक गुप्त मंदिरों की स्थापत्य शैली की विशेषता विस्तृत पत्थर की नक्काशी, जटिल मूर्तियां और ऊंची मीनारें थीं। ये मंदिर आमतौर पर ऊँचे चबूतरे पर बनाए जाते हैं जिनमें कई प्रवेश द्वार होते हैं जो केंद्रीय गर्भगृह की ओर जाते हैं जहाँ भगवान की मूर्ति स्थापित होती है। सबसे प्रसिद्ध प्रारंभिक गुप्त मंदिरों में से एक नागर शैली में निर्मित मध्य प्रदेश के देवगढ़ में दशावतार मंदिर है। 5वीं शताब्दी ईस्वी का यह मंदिर, अपनी उत्कृष्ट नक्काशी और जटिल मूर्तियों के लिए जाना जाता है, जिसमें भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों को दर्शाया गया है। यह मंदिर अपनी अनूठी वास्तुशिल्प विशेषताओं के लिए भी उल्लेखनीय है, जैसे कि घुमावदार शिखर या टॉवर, जो प्रारंभिक गुप्त मंदिर वास्तुरूप की एक विशेषता है। गुप्त राजवंश के शुरुआती दिनों में, कई प्रमुख हस्तियाँ (गुप्त वंश के राजा समुद्रगुप्त) मंदिरों के निर्माण और संरक्षण में शामिल थे।

मंदिर की दीवारों पर सजी उत्कृष्ट नक्काशी और मूर्तियां हिंदू पौराणिक कथाओं, भगवान विष्णु और विभिन्न देवताओं के जीवन के दृश्यों को दर्शाती हैं, जो भक्तों के बीच प्रेरणा और श्रद्धा को प्रेरित करती हैं। मंदिरों के निर्माण में पेश किए गए वास्तुशिल्प नवाचार, जैसे कि पत्थर के खंभे, लिंटल्स और कॉर्बल्स का उपयोग, आने वाली सदियों के लिए भारत में मंदिर वास्तुकला के लिए मानक निर्धारित करते हैं।

नागर भौली

'नागर शैली' उत्तर भारत में हिंदू वास्तुकला की तीन शलियों में से एक है। इन तीन शैलियों को मुख्य रूप से नागर शैली, द्रविड़ शैली और बेसर शैली के नाम से जाना जाता

है। 'नागर' शब्द की उत्पत्ति नगर से हुई है। सर्वप्रथम चूँकि इस शैली का प्रयोग नगर निर्माण में किया जाता था इसलिए इसे 'नागर शैली' कहा गया। इस शैली का प्रसार हिमालय से लेकर विंध्य पर्वत तक देखा जा सकता है। वास्तु''ाास्त्र सिद्धांत के अनुसार, नागर शैली के मंदिरों की विशेषता नीचे से ऊपर तक चतुष्कोणीय आकृति होती है। एक विकसित नागर मंदिर में गर्भगृह, उसके समक्ष क्रम''ाः अंतराल, मंडप तथा अर्ध–मंडप प्राप्त होते ह। एक ही अक्ष पर एक दूसरे से संलग्न इन भागों का निर्माण किया जाता है।

नागर शैली में बने मंदिरों की मुख्य रूप से 8 प्रमुख अंग होते हैं।

1. **मूल आधार** – जिस पर सम्पूर्ण भवन खड़ा किया जाता है।
2. **मसूरक** – नींव और दीवारों के बीच का भाग
3. **जंघा** – दीवारें (विशेषकर गर्भगृह की दीवारें)
4. **कपोत** – कार्निस
5. **शिखर** – मंदिर का शीर्ष भाग अथवा गर्भगृह का उपरी भाग
6. **ग्रीवा** – शिखर का ऊपरी भाग
7. **वर्तुलाकार आमलक** – शिखर के शीर्ष पर कलश के नीचे का भाग
8. **कलश** – शिखर का शीर्षभाग

मंदिरों के प्रमुख अवयव

कलश : यह मंदिर का सबसे ऊपर का हिस्सा होता है। यह मुख्य रूप से उत्तर भारतीय शैलियों में देखा जाता है।

आमलक : ऊर्ध्वाधर शीर्ष एक क्षैतिज नालियुक्त चक्र जो मंदिर के शीर्ष पर होता था। ज्यादातर उत्तर भारतीय मंदिरों में देखा जाता है।

शिखर/विमान : 5वीं शताब्दी में इसका निर्माण शुरू हुआ। यह शीर्ष पर एक पर्वत जैसा शिखर होता है। उत्तर भारत में इसे शिखर कहा जाता है और आकार में वक्ररेखीय होता है। दक्षिण में, यह एक पिरामिड मीनार की तरह होता है जिसे विमान कहा जाता है।

गर्भगृह : इसका शाब्दिक अर्थ गर्भ गृह होता है। यह एक गुफा की तरह दिखने वाला गर्भगृह होता है जिसमे मंदिर के प्रमुख देवता को स्थापित किया जाता है। पहले के समय में, यह एक छोटा सा कक्ष होता था जिसमें एक प्रवेश द्वार होता है। बाद की अवधि में,

इसके कक्ष के आकार में वृद्धि होती चली गईं

अंतराल : यह गर्भ–गृह और मंडप के बीच एक गलियारा होता था।

मंडप : मंदिर का प्रवेश स्थल। यह कोई द्वार मंडप या सभा भवन हो सकता है और इसे सामान्य रूप से बड़ी संख्या में पूजा करने वाले लोगों को स्थान प्रदान करने के लिए बनाया जाता है।

जगती : यह उत्तर भारतीय मंदिरों में साधारण है और यह एक उठा हुआ मंच होता है जहां श्रद्धालु बैठकर कर सकते हैं।

वाहन : यह मुख्य देवता का आसन या वाहन होता है, जिसे स्तम्भों या ध्वज के सामने स्थापित किया जाता था।

नागर भौली के मंदिरों की विशेशताएं

गुप्त राजवंश, जिसने चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी के दौरान भारत के अधिकांश भाग पर शासन किया, महान सांस्कृतिक और स्थापत्य उपलब्धि का काल था। इस काल की सबसे प्रतिष्ठित विशेषताओं में से एक मंदिर वास्तुकला की नागर शैली का विकास था। नागर शैली के प्रारंभिक गुप्त मंदिरों में कई विशिष्ट विशेषताएं थीं जो उन्हें पहले की स्थापत्य परंपराओं से अलग करती थीं। नागर शैली के प्रारंभिक गुप्त मंदिरों की सबसे प्रमुख विशेषताओं में से एक उनकी ऊँची अधिरचनाएँ थीं, जिन्हें 'शिखर' के नाम से जाना जाता था। ये ऊंची संरचनाएं मंदिर के केंद्रीय गर्भगृह से ऊपर उठी हुई थीं, जो पवित्र पर्वत मेरु का प्रतीक थीं, जिसे हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में ब्रह्मांड का केंद्र माना जाता था।[1] शिखर आम तौर पर क्षैतिज स्तरों की एक श्रृंखला से बने होते थे, जिनमें से प्रत्येक को हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों को चित्रित करने वाली जटिल नक्काशी और मूर्तियों से सजाया गया था।

लगभग सभी प्रारंभिक गुप्त मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बनाए गए थे और मंदिर तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ थीं। उनके पास एक सपाट छत, मूर्ति वाला एक गर्भगृह और एक द्वार है।

[1] Dallapiccola, A. L. (1978). "The Concept of the Shikhara in North Indian Temple Architecture". Artibus Asiae, vol. 40, no. 3, pp. 198-218.

गर्भगृह के सामने खंभों पर टिकी एक बालकनी है। दरवाजे की चौखट को फूलों से भरे फूलदानों से सजाया गया था, फूलदानों से गिरते फूलों के गुलदस्ते। स्तम्भों की पारस्परिक दूरी की योजना बहुत विशेष है। पूरी इमारत में चार तरफ मेहराब हैं, और कहीं भी कोई जोड़ नहीं देखा जा सकता है। ये सभी उस समय की कला की विशेषताओं को दर्शाते हैं। मंदिर के दरवाजे और चौखटों को विशेष रूप से सजाया गया है। दोनों चित्रों में एक ओर मकरवाहिनी गंगा तथा दूसरी ओर कूर्मवाहिनी यमुना की आकृतियाँ चित्रित हैं। मंदिर के चारों ओर एक प्रदिक्षणा पथ है जो अधिकतर ढका हुआ है। कुछ मंदिरों के स्तंभ चौकोर हैं और स्तंभों के शीर्ष चार खड़े शेरों की मूर्तियों से सजाए गए हैं। ये स्तंभ पूर मंदिर का भार उठाते हैं।

नागर शैली में प्रारंभिक गुप्त मंदिरों की एक अन्य प्रमुख विशेषता समरूपता और ज्यामितीय अनुपात पर उनका जोर था। मंदिर अक्सर वर्गाकार या आयताकार योजना पर बनाए जाते थे, जिसमें एक केंद्रीय मंदिर होता था जो सहायक मंदिरों और आंगना की एक श्रृंखला से घिरा होता था। मंदिर परिसर के स्वरूप को सद्भाव और संतुलन की भावना पैदा करने के लिए सावधानीपूर्वक निर्मित किया गया था, जो एक प्राचीन भारतीय वास्तुशिल्प ग्रंथ 'वास्तु शास्त्र' के सिद्धांतों को दर्शाता है (मिस्टर, 1986)।[2] नागर शैली में प्रारंभिक गुप्त मंदिरों का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण उत्तर प्रदेश के देवगढ़ में दशावतार मंदिर है। छठी शताब्दी ईस्वी में निर्मित, यह मंदिर अपने जटिल नक्काशीदार शिखरों और मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है, जो हिंदू भगवान विष्णु के दस अवतारों को दर्शाते हैं।[3] मंदिर की वास्तुकला और मूर्तिकला की विशेषताएं गुप्त काल की कलात्मक और धार्मिक उपलब्धियों का उदाहरण हैं, जो इसे बनाने वाले कारीगरों के कौशल और रचनात्मकता को प्रदर्शित करती हैं।

प्रारंभिक प्रमुख गुप्तकालीन मंदिर

1. तिगावा का विश्णु मंदिर – तिगावा का विष्णु मंदिर, जिसे तिगावा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, भारत के मध्य प्रदेश के छोटे से गाँव तिगावा में स्थित है। यह प्राचीन

[2] Meister, M. W. (1986). "The Manasara on the Science of Temple Architecture". Journal of the Royal Asiatic Society, vol. 118, no. 2, pp. 173-189.

[3] Sircar, D. C. (1983). "Deogarh: A Study of Early Medieval Temple Architecture". Journal of Indian History, vol. 28, no. 1, pp. 45-62.

मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है, जो हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक हैं। यह मंदिर प्रारंभिक उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला का एक अच्छा उदाहरण है, जो गुप्त काल के दौरान 5वीं शताब्दी का है।[4] इसे भारत के सबसे पुराने (वर्तमान) जीवित मंदिरों में से एक माना जाता है और इसका ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व बहुत अच्छा है। तिगावा मंदिर एक ऊंचे चबूतरे पर बना है और इसका निर्माण पंचायतन शैली में किया गया है, जो भारतीय मंदिरों की एक विशिष्ट स्थापत्य शैली है जहां मुख्य मंदिर चार छोटे मंदिरों से घिरा हुआ है।[5]

मुख्य मंदिर में भगवान विष्णु की मूर्ति है, जिन्हें चार भुजाओं के साथ खड़ी मुद्रा में दर्शाया गया है, प्रत्येक हाथ में शंख, चक्र, गदा और कमल हैं। मंदिर में हिंदू पौराणिक कथाओं और किंवदंतियों के विभिन्न दृश्यों को दर्शाते हुए सुंदर मूर्तियां और चित्रांकनी जटिल नक्काशी की गई है। मंदिर का बाहरी भाग देवी–देवताओं और दिव्य प्राणियों की जटिल नक्काशी से सजाया गया है। मंदिर की दीवारों को जानवरों, पक्षियों और फूलों की सुंदर मूर्तियों से भी सजाया गया है, जो उस समय के कारीगरों की उत्कृष्ट शिल्प कौशल का प्रदर्शन करती हैं। मंदिर के शीर्ष पर एक शिकारा या मीनार है, जो उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला की एक प्रमुख विशेषता है।[6] तिगावा मंदिर सिर्फ एक पूजा स्थल नहीं है, बल्कि प्राचीन भारतीय कला और वास्तुकला का खजाना भी है। यह उस युग के लोगों की धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक प्रथाओं और कलात्मक कोशल में मूल्यवान अंतदृष्टि प्रदान करता है। यह मंदिर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और इसकी प्राचीन सभ्यताओं की स्थापत्य प्रतिभा के प्रमाण के रूप में खड़ा है।

2. मध्य प्रदेश का सांची–मंदिर – सांची मंदिर मध्य प्रदेश राज्य में स्थित है। यह मंदिर भगवान बुद्ध को समर्पित ह और भारत में सबसे पुराने और सबसे अच्छी तरह से संरक्षित

[4] Gupta, S.P. (2007). Temples of Madhya Pradesh. Indira Gandhi National Centre for the Arts, New Delhi.

[5] Michell, George (2000). The Hindu Temple: An Introduction to its Meaning and Forms. University of Chicago Press.

[6] Dhaky, M.A. (1978). The Indian Temple Forms in Karṇāṭa Inscriptions and Architecture. Artibus Asiae Publishers.

बौद्ध स्मारकों में से एक है।[7] ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में किया था, लेकिन बाद में गुप्त शासकों द्वारा इसका विस्तार और जीर्णोद्धार किया गया। सांची मंदिर में कई छोटे स्तूप, मंदिर और मठ भी हैं, जो सभी सुंदर नक्काशी और मूर्तियों से सजाए गए हैं। मंदिर परिसर एक सुरम्य स्थान पर स्थित है, जो हरे–भरे हरियाली से घिरा हुआ है और सांची शहर का दृश्य प्रस्तुत करता है।[8] यह मंदिर एक वर्गाकार चबूतरे पर बना है, जिसका प्रत्येक किनारा एक मुख्य दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह सममित वास्तुशिल्प रूप नागर शैली की विशेषता है, क्योंकि यह शैली मंदिर वास्तुकला में संतुलन और सामंजस्य पर जोर देती है। वर्गाकार फर्श योजना मंदिर के केंद्र में केंद्रीकृत संरचनाओं जैसे गुंबदों या टावरों को रखने की भी अनुमति देती है, जिससे इसकी दृश्य अपील और बढ़ जाती है।[9] सांची मंदिर में नागर शैली की वास्तुकला की मुख्य विशेषताओं में से एक 'गोपुरा' नामक एक शानदार द्वार की उपस्थिति है।[10] मुख्य मंदिर के सामने एक मंडप या स्तंभयुक्त हॉल है। मंडप सभाओं, अनुष्ठानों और समारोहों के लिए स्थान थे, और अक्सर विस्तृत नक्काशी और मूर्तियों से सजाए जाते थे। यह तत्व मंदिर परिसर में भव्यता और स्थापत्य रुचि की भावना जोड़ता है। सांची मंदिर में एक खूबसूरती से सजाया गया मंडप है जो मुख्य मंदिर की ओर जाता है, जो पवित्र स्थान में एक अंतरंग और औपचारिक प्रवेश प्रदान करता है। नागर की स्थापत्य शैली का यह पहलू गुप्त काल के दौरान मंदिरों में सामुदायिक पूजा और सभाओं के महत्व को दर्शाता है।[11]

---

[7] Michell, George (1988). The Penguin Guide to the Monuments of India: Buddhist, Jain, Hindu. Penguin Books. p. 211.

[8] Kulshrestha, Shushma (2005). Buddhist Sites Across South Asia. Konkan Department of Archaeology and Museums. p. 112.

[9] "The Architecture of the Indian Subcontinent" by T. A. Greene, Cambridge University Press, 2003.

[10] Dhaky, M.A. The Indian Temple Traceries. Abhinav Publications, 2001.

[11] John Marshall, A Guide to Sanchi: Facts for visitors, history and monument (Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers, 1980), 56

3. देवगढ़ मन्दिर – देवगढ़ का मंदिर, जिसे दशावतार मदिर के नाम से जाना जाता है,[12] बहुत महत्व रखता है। देवगढ़ दशावतार मंदिर इस काल की वास्तुकला निपुणता का एक अच्छा उदाहरण है, जिसमें इसके विस्तृत नक्काशीदार स्तंभ, जटिल फ्रिज और भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों को चित्रित करने वाली विस्तृत मूर्तियां हैं।[13] मंदिर का प्रत्येक भाग असाधारण कलात्मक सार प्रदर्शित करन के साथ–साथ एक व्यावहारिक उद्देश्य भी पूरा करता है। कुछ स्मारक इतने उच्च स्तर की शिल्प कौशल, परिष्कार और मूर्तिकला प्रभाव में समृद्ध परिष्कार को प्रदर्शित करते हैं जैसे कि देवगढ़ में गुप्त मंदिर।[14] यह गुप्त शिल्पकारों द्वारा सिद्ध की गई मंदिर शैली का प्रतीक है। देवगढ़ मंदिर का नक्”ाा–

Source:https://en.m.wikipedia.org/wiki/File:1880_sketch_of_early_6th_century_Deogarh_Dashavatara_Hindu_temple_plan.jpg

मंदिर की विशिष्ट विशेषताएं–

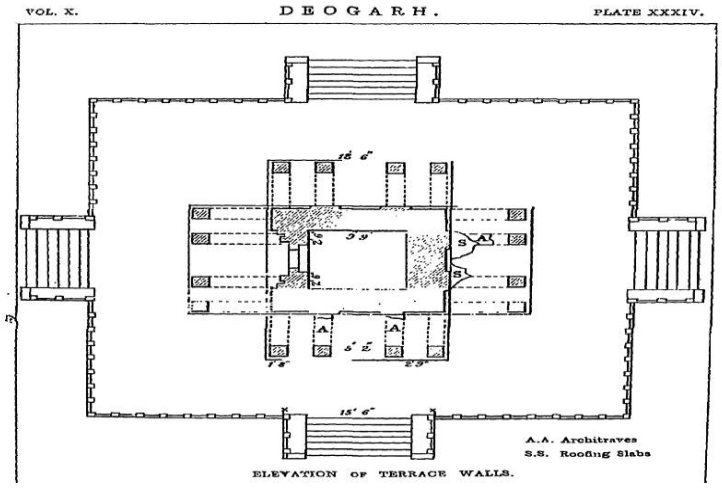

मंदिर एक भव्य चबूतरे (55 फीट 6 इंच) के केंद्र में स्थित है। इसकी स्थापना की शैली स्तूपों से ली गई थी, जैसे कि मंदिर एक मजबूत चबूतरे पर खड़ा है, जिसका खंड वर्गाकार है और चारो ओर चार अक्षीय सीढ़ियां हैं। प्रत्येक सीढ़ी में सबसे निचली सीढ़ी के

---

[12] V.S. Agarwala, "The gupta temple at Devagarh", Art and Thought, pp. 51-4; studies in Indian Art, pp. 220-225.

[13] Chakravarti, Subodh. The Art and Architecture of the Gupta Empire. Kolkata: Niyogi Books, 2010.

[14] P. Brown, Indian Architecture, p. 58

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

रूप में एक चंद्र–शिला है। चारों कोनों पर, जमीनी स्तर पर चार सहायक मंदिर थे, जो बाहर से आते थे और पेंथियन के अन्य देवताओं को समर्पित थे, पूरा परिसर पंचायतन अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता था, संभवतः यह इसका ज्ञात सबसे पहला उदाहरण है। चबूतरे के मुख पर जटिल सजावट थी। इसमें नक्काशीदार पैनलों की एक सतत पंक्ति थी, जो छोटे भित्तिस्तंभों से घिरी हुई थी। पैनलों को दो स्तरों में विभाजित किया गया था, जिनमें निचला वाला बड़ा (ऊंचाई में 2 फीट 9 इंच) और ऊपरी वाला छोटा (ऊंचाई में 15 इंच) था। इन पैनलों में धार्मिक किंवदंतियाँ और पौराणिक दृश्य प्रदर्शित किए गए। यह विशेषता कमोबेश बौद्ध परंपरा से मेल खाती है। यह मंदिर एक साधारण संरचना है, जिसमें 9′9′′ वर्ग का एक छोटा आंतरिक कक्ष है। चार दीवारें, जो 3′7′′ मोटी हैं, सामने की ओर एक नक्काशीदार द्वार और बाकी हिस्सों पर तीन नक्काशीदार रथिका पैनलों द्वारा उभरी हुई हैं। मंदिर का सबसे अच्छा संरक्षित हिस्सा और सौंदर्य की दृष्टि से सबसे अधिक आकर्षक इसका द्वार पश्चिम की ओर है (ऊंचाई 11′ 8′′, चौड़ाई 10′ 9′′) वास्तविक प्रवेश द्वार का माप (6′11′′ × 3′4.5′′) है।

4. भूमरा का शिव मंदिर – यह मंदिर मध्य प्रदेश के नागोद राज्य में जबलपुर–ईटारजी रेलवे लाइन पर स्थित है। राखलदास बनर्जी ने 1920 में इस मंदिर की खोज की थी। यह मंदिर हिंदू भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें हिंदू धर्म में सबसे महत्वपूर्ण देवताओं में से एक माना जाता है।[15] मंदिर विशिष्ट गुप्तकालीन शैली में बनाया गया है, जिसमें एक वर्गाकार गर्भगृह है जो स्तंभों वाले हॉल या मंडप से घिरा हुआ है।[16] मंडप को जटिल नक्काशीदार स्तभों द्वारा समर्थित किया गया है, जिसमें पुष्प पैटर्न और पौराणिक प्राणियों जैसे विभिन्न रूपांकनों को दर्शाया गया है।[17] यह मंदिर लगभग 1.4 मीटर (4 फीट 7) ऊंचे चबूतरे पर खड़ा है। सीढ़ियाँ मंच तक ले जाती हैं, और सीढ़ियाँ 11.25 फीट (3.43 मीटर)

[15] Kramrisch, Stella. The Presence of Shiva. Princeton: Princeton University Press, 1981.

[16] Kulshreshtha, Sushama. "The Gupta Temple Art – An Aesthetic Formulation." International Journal of Science, Engineering and Technology Research (IJSETR) 5, no. 10 (2016): 1883-1886.

[17] Michell, George. The Hindu Temple: An Introduction to Its Meaning and Forms. Chicago: University of Chicago Press, 1988.

लंबी और 8.43 फीट (2.57 मीटर) चौड़ाई में हैं। चबूतरे के शीर्ष पर, वर्गाकार योजना वाले दो संकेंद्रित कक्ष हैं, छोटा भीतरी वर्ग 15.17 फीट (4.62 मीटर) भुजा वाला एक खिड़की रहित गर्भगृह है। बाहरी वर्ग की लंबाई 35 फीट (11) और चौड़ाई भी इतनी ही है। भीतरी गर्भगृह और बाहरी हिस्से के बीच की जगह में परिक्रमा के लिए एक बंद जगह बनाई गई। गर्भगृह की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ दो छोटे प्लेटफार्मों से घिरी हुई हैं जो लगभग 8.17 फीट (2.49 मीटर) , 5.67 फीट (1.73 मीटर) हैं, प्रत्येक में एक छोटा मंदिर है। मंदिर में संभवतः तीन प्रवेश द्वार थे। मंडप 29.83 फीट (9.09 मीटर) गुणा 13 फीट (4.0 मीटर) था। 20वीं शताब्दी से जो खंडहर संरचना देखी जा सकती है, वह आंतरिक गर्भगृह है जिसमें जटिल नक्काशी वाले मंच, सीढ़ियाँ और दूर की दीवारें हैं। मन्दिर की छत साधारण थी। गर्भगृह के दरवाजे पर दो नक्काशीदार जम्ब्स लिंटेल और एक देहली है।

गर्भगृह में एक शिवलिंग है, जो हिंदू भगवान शिव का प्रतीक है, जिसकी पूजा मंदिर में आने वाले भक्तों द्वारा की जाती है।[18] मंदिर की छत एक शिखर से सुशोभित है, एक मीनार जैसी संरचना जो उत्तर भारतीय मंदिरों की एक सामान्य विशेषता है।[19] भूमरा शिव मंदिर की एक अन्य प्रमुख विशेषता इसकी जटिल नक्काशी है। मंदिर को जटिल नक्काशी से सजाया गया है जो हिंदू पौराणिक कथाओं जैसे शिव और पार्वती के विवाह और देवी दुर्गा के विभिन्न रूपों के दृश्यों को दर्शाता है।[20] नक्काशियों में दिव्य प्राणियों के चित्रण भी शामिल हैं, जैसे अप्सराएं (दिव्य नर्तक) और गंधर्व (दिव्य संगीतकार)।[21] यह मंदिर भक्तों के लिए धार्मिक महत्व भी रखता है।

---

[18] Bhattacharya, Ananya. "Shiva Worship in the Gupta Period: An Archaeological Study." Puratattva: A Journal of the Department of Archaeology 32 (2002): 60-67.

[19] Harle, J.C. The Art and Architecture of the Indian Subcontinent. New Haven: Yale University Press, 1994.

[20] Doshi, Saryu. "Narrative Carvings on the Bhumra Shiv Temple." South Asian Studies 24, no. 2 (2008): 89-102.

[21] Bhandari, Nalini. "The Iconography of Celestial Beings in Gupta Period Art." Art Journal Volume 35, issue 1 (1975): 23-31.

निष्कर्ष

गुप्तकालीन शिलालेखों में जिस प्रकार मन्दिरों की चर्चा की गई है, उससे प्रतीत होता है कि इस काल में बड़े पैमाने पर मन्दिरों का निर्माण हुआ होगा और उनका स्वरूप काफी विकसित रहा होगा। प्रारंभिक–गुप्त काल के मंदिरों का भारतीय समाज, धर्म और कला पर गहरा प्रभाव पड़ा। ये मंदिर आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन के केंद्र के रूप में काम करते थे, दूर–दूर से तीर्थयात्रियों, विद्वानों और कारीगरों को आकर्षित करते थे। मंदिर की दीवारों पर सजी जटिल नक्काशी और मूर्तियां हिंदू पौराणिक कथाओं, और विभिन्न दिव्य प्राणियों के दृश्यों को दर्शाती हैं, जो भक्तों के बीच भक्ति और विस्मय को प्रेरित करती हैं। मंदिरों के निर्माण में पेश किए गए वास्तुशिल्प नवाचार, जैसे कि पत्थर के खंभे, लिंटल्स और कॉर्बल्स का उपयोग, आने वाली सदियों के लिए भारत में मंदिर वास्तुकला क लिए मानक निर्धारित करते हैं। जटिल फ्रिज़, मंडल और देवी–देवताओं की मूर्तियों सहित अलंकृत सजावट, इन मंदिरों पर काम करने वाले कारीगरों की कलात्मक उत्कृष्टता को दर्शाती है। मंदिर परिसर शैक्षिक और सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में भी कार्य करते थे, प्रदर्शनों, त्योहारों और अनुष्ठानों की मेजबानी करते थे जो समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध करते थे। प्रारंभिक–गुप्त काल के मंदिर इतिहास, कला और धर्म की एक समृद्ध टेपेस्ट्री का प्रतिनिधित्व करते हैं जो दुनिया भर के विद्वानों और उत्साही लोगों को आकर्षित करता है। उनका वास्तुशिल्प वैभव, धार्मिक प्रतीकवाद और सांस्कृतिक महत्व प्राचीन भारत की आध्यात्मिक मान्यताओं और सामाजिक प्रथाओं में मूल्यवान अंतदृष्टि प्रदान करते हैं। मंदिरों के संरक्षण और संवर्धन में विविध हितधारकों को शामिल करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ये अनमोल स्मारक भावी पीढ़ियों के लिए सराहने और संजोने के लिए बने रहें।